संस्थान समाचार

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

(शिक्षा मंत्रालय, भारत संरकार की स्वायत्तशासी) संस्था और उसके केंद्रो की समाचार पत्रिका

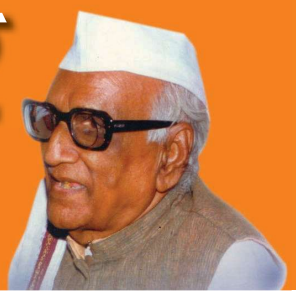

■ प्रकाशन : वर्ष : 12 ■ अंक : 79 ■ मार्च 2026

मिजोरम में हिंदी के विकास को लेकर महामहिम से भेंट

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी एवं शिलांग केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय मिजोरम प्रवास के समय मिजोरम के महामहिम राज्यपाल जनरल वी. के. सिंह से लोकभवन, आइजोल में भेंट की। इस भेंट में उन्होंने मिजोरम में हिंदी भाषा के विकास पर चर्चा की। महामहिम राज्यपाल ने केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा पूर्वोत्तर में हिंदी भाषा के साथ-साथ स्थानीय भाषाओं के साहित्य के संरक्षण में किए जा रहे कार्यों की सराहना की।

महामहिम से भेंटवार्ता

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के संस्थापक पद्मभूषण डॉ. मोटूरि सत्यनारायण जी की आवक्ष प्रतिमा. हैदराबाद केंद्र के परिसर में स्थापित की जा रही है। जिसके अनावरण हेतु माननीय राज्यपाल, तेलंगाना राज्य से क्षेत्रीय निदेशक डॉ. फत्तराम नायक, डॉ. एस. राधा एवं डॉ. दीपेश व्यास लोक भवन, हैदराबाद में भेंट कर आमंत्रित किया।

नारी शक्ति को नमन : अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

8 मार्च के दिन को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिवस को मनाने का का उद्देश्य सिर्फ महिलाओं को सम्मान देना ही नहीं बल्कि उनके अधिकारों और समान अवसरों के प्रति जागरूकता बढ़ाना भी है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि आज भी कई जगह महिलाओं को शिक्षा, रोजगार और अपनी हक में निर्णय लेने के अधिकार में बराबरी नहीं मिल पाती।

ऐसे में यह अवसर समाज को सोचने और बदलाव की दिशा में कदम बढ़ाने के लिए प्रेरित करता है। इस वर्ष 'अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस' का थीम 'गिव टू गेन' (दान करके लाभ प्राप्त करें) रखी गई। इस थीम का मुख्य संदेश यह है कि जब समाज महिलाओं को आगे बढ़ने के लिए सहयोग और अवसर देता है तो इसका फायदा पूरे समाज को मिलता है। शिक्षा, नेतृत्व, बिजनेस, विज्ञान, कला और राजनीति जैसे क्षेत्रों में जब महिलाएं सफल होती हैं, तो परिवार से लेकर देश तक नाम रोशन होता है।

केंद्रीय हिंदी संस्थान के अटल बिहारी सभागार में दिनांक 9 मार्च को 'अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस' के उपलक्ष में भव्य कार्य आयोजित किया गया। कार्यक्रम में संस्थान के शिक्षकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी देखने को मिली जिससे आयोजन अत्यंत सफल और प्रेरणादायक रहा।

कार्यक्रम के प्रथम चरण में केंद्रीय हिंदी संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने सभी महिला शिक्षकों एवं महिला कर्मचारियों को सम्मान स्वरूप भेंट प्रदान की।

इस अवसर पर उन्होंने अपने संबोधन में नारी शक्ति के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि महिलाएँ न केवल परिवार बल्कि समाज और राष्ट्र निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। उन्होंने कार्यस्थलों पर महिलाओं के योगदान की सराहना करते हुए यह भी कहा कि एक सशक्त समाज का निर्माण तभी संभव है जब महिलाओं को समान अवसर और सम्मान प्राप्त हो।

कार्यक्रम के द्वितीय चरण में एक विचारोत्तेजक पैनल डिस्कशन का आयोजन किया गया, जिसकी रूपरेखा डॉ. अंकुश तुलसीराम औंधकर, कुलसचिव (प्रभार), केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा प्रस्तुत की गई। इस चर्चा में महिलाओं से जुड़े विभिन्न सामाजिक, शैक्षिक एवं व्यावसायिक मुद्दों पर गहन विचार-विमर्श किया गया। पैनल डिस्कशन ने महिलाओं की वर्तमान स्थिति पर तो विचार किया ही, उनके समक्ष उपस्थित चुनौतियों और संभावनाओं पर भी प्रकाश डाला। इस अवसर पर कई विशिष्ट अतिथियों ने अपने विचार प्रस्तुत किए। समाज सेविका श्रीमती कांता माहेश्वरी ने महिलाओं के सामाजिक उत्थान और आत्मनिर्भरता पर जोर देते हुए कहा कि आज की नारी हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही है। श्रीमती निर्मला दीक्षित, पूर्व अध्यक्ष, महिला आयोग ने महिलाओं के अधिकारों और उनकी सुरक्षा से संबंधित महत्वपूर्ण मुद्दों को उठाया। वहीं, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा की पूर्व प्रोफेसर प्रो. बीना शर्मा ने शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका को रेखांकित करते हुए उनके सशक्तिकरण में शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला। इसके अतिरिक्त, एंटीरोमियो (प्रभार) सब इंस्पेक्टर कमलानगर, आगरा श्रीमती मनीषा ने महिलाओं की सुरक्षा और कानून व्यवस्था के संदर्भ में अपने विचार साझा किए।

कार्यक्रम का समापन उत्साहपूर्ण वातावरण में हुआ जिसमें सभी उपस्थितजनों ने नारी सशक्तिकरण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की।

भाषाई दक्षता को प्रोत्साहित करती हैं साहित्यिक प्रतियोगिताएँ

दिनांक 05 एवं 06 मार्च 2026 को केंद्रीय हिंदी संस्थान के अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग द्वारा विदेशी विद्यार्थियों के लिए वार्षिक साहित्यिक प्रतियोगिताओं का आयोजन उत्साहपूर्वक किया गया। इस दो दिवसीय कार्यक्रम का उद्देश्य विदेशी विद्यार्थियों में हिंदी भाषा के प्रति रुचि विकसित करना, उनकी भाषाई दक्षता को प्रोत्साहित करना तथा उनकी रचनात्मक और साहित्यिक प्रतिभा को अभिव्यक्त करने के लिए एक मंच प्रदान करना था। कार्यक्रम में विभिन्न देशों से आए विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और हिंदी भाषा में अपनी अभिव्यक्ति क्षमता का प्रभावशाली प्रदर्शन किया। सभी प्रतियोगिताओं को दो वर्गों में विभाजित किया गया था—कनिष्ठ वर्ग जिसमें कक्षा 100 ए, 100 बी तथाकक्षा 200 के विद्यार्थी शामिल थे तथा वरिष्ठ वर्ग जिसमें कक्षा 300 एवं 400 के विद्यार्थी शामिल थे। यह विभाजन इसलिए किया गया ताकि विद्यार्थियों की भाषा क्षमता के अनुसार स्वस्थ प्रतिस्पर्धा सुनिश्चित की जा सके।

दिनांक 05 मार्च 2026 को अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग में पोस्टर प्रतियोगिता एवं निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों ने अत्यंत उत्साह के साथ भाग लेते हुए अपनी कल्पनाशीलता, रचनात्मकता तथा हिंदी भाषा पर अपनी पकड़ का परिचय दिया। पोस्टर प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने भारतीय त्योहार एवं योग जैसे विषयों पर आकर्षक एवं संदेशपूर्ण पोस्टर प्रस्तुत किए, जबकि निबंध लेखन प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने अपने विचारों को प्रभावशाली और सुव्यवस्थित ढंग से अभिव्यक्त किया। इन प्रतियोगिताओं के निर्णायक मंडल में बैकुंठी देवी कन्या महाविद्यालय, आगरा की हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. गुंजन तथा हिंदी विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. कंचन गुप्ता उपस्थित रहीं। उन्होंने प्रतिभागियों के प्रदर्शन का मूल्यांकन भाषा की शुद्धता, विषय-वस्तु, रचनात्मकता और प्रस्तुति के आधार पर किया।

दिनांक 06 मार्च 2026 को भाषण प्रतियोगिता, काव्य-आवृत्ति प्रतियोगिता तथा वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ केंद्रीय हिंदी संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी तथा अंतरराष्ट्रीय हिंदी

शिक्षण विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. जोगेन्द्र सिंह मीणा द्वारा किया गया। अपने संबोधन में निदेशक महोदय ने साहित्य का व्यक्ति के जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव विषय पर रोचक एवं सारगर्भित व्याख्यान दिया। डॉ. जोगेन्द्र सिंह मीणा ने हिंदी भाषा के वैश्विक प्रसार पर प्रकाश डालते हुए बताया कि वर्तमान में हिंदी विश्व स्तर पर संवाद और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का एक महत्वपूर्ण माध्यम बनती जा रही है और विदेशी विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी इस दिशा में अत्यंत सराहनीय है। द्वितीय दिवस की प्रतियोगिताओं के निर्णायक मंडल में राजा महेंद्र प्रताप विश्वविद्यालय, अलीगढ़ के सेवानिवृत्त प्रोफेसर प्रो. अजीत कुमार जैन तथा डॉ. भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा के कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी हिंदी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ के हिंदी विभाग से डॉ. केशव कुमार शर्मा उपस्थित रहे। भाषण प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने विभिन्न विषयों पर आत्मविश्वास और स्पष्टता के साथ अपने विचार प्रस्तुत किए। काव्य आवृत्ति प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने हिंदी की प्रसिद्ध कविताओं का भावपूर्ण और प्रभावशाली पाठ कर श्रोताओं को प्रभावित किया। वहीं वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने समसामयिक विषयों पर तार्किक एवं संतुलित तर्क प्रस्तुत करते हुए अपनी भाषाई और वैचारिक क्षमता का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।सभी प्रतियोगिताएँ सफलतापूर्वक संपन्न हुईं और प्रतिभागियों के उत्कृष्ट प्रदर्शन की निर्णायक मंडल द्वारा सराहना की गई।

इस प्रकार का आयोजन विदेशी विद्यार्थियों में हिंदी भाषा के प्रति लगाव को बढ़ाने तथा हिंदी के अंतरराष्ट्रीय प्रसार को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हुआ।

हिंदी भाषा संवर्धनात्मक पाठ्यक्रम आयोजित

नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग द्वारा दिनांक 10.03.2026 से 19.03.2026 तक गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद के बी.एड. पाठ्यक्रम के 33 प्रशिक्षणार्थियों हेतु हिंदी भाषा संवर्धनात्मक पाठ्यक्रम संचालित किया गया। पाठ्यक्रम का उद्घाटन प्रो. हरिशंकर, समन्वयक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा की अध्यक्षता में सरस्वती प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन कर किया गया।

उन्होंने अपने अध्यक्षीय उदबोधन में कहा कि, 'यह बहुत अच्छा है कि दोनों संस्थाएँ केंद्रीय हिंदी संस्थान और गुजरात विद्यापीठ दोनों ही हिंदी का काम करते हैं और दोनों ही संस्थाओं में पूरे देश के विद्यार्थी इन संस्थाओं में प्रवेश लेते हैं। उन्होंने कहा कि केंद्रीय हिंदी संस्थान आने से प्रशिक्षणार्थियों को आगरा का इतिहास एवं आस पास के ऐतिहासिक स्थलों को देखने का मौका मिलता है, उसकी संस्कृति को जानने का मौका मिलता है यही आपका अध्ययन के साथ-साथ शैक्षिक परिभ्रमण भी होगा।

'नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग की विभागाध्यक्ष एवं पाठ्यक्रम संयोजक प्रो. सपना गुप्ता ने प्रशिक्षण में हिंदी संबंधित प्राप्त होने वाले ज्ञान के बारे में जानकारी प्रेषित की। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों की हिंदी बोलने की शैली की प्रशंसा करते हुए कहा कि आप सभी प्रशिक्षणार्थी एक शिक्षक बनने की राह पर हैं, और जब आप अपनी कक्षा में जाएँ हिंदी के अध्यापक बन कर, तब अपने विद्यार्थिओं को और अच्छे ढंग से हिंदी में पढाएँ और सिखाएँ। उन्होंने कहा कि अध्ययन अध्यापन के साथ कक्षा में अनुशासित रहना, अपनी जिज्ञासाओं को कक्षा में पूछना एवं ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण करना आपके पाठ्यक्रम का हिस्सा रहेगा। गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद से पधारे डॉ. निलेश कापड़िया, पूर्वोत्तर शिक्षण सामग्री निर्माण विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. मीनाक्षी दुबे की गरिमामयी उपस्थिति रही। दो प्रशिक्षणार्थियों द्वारा अभिमत अनुभव प्रेषित किया गए। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. अनामिका गुप्ता द्वारा किया गया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान द्वारा किया गया।

पाठ्यक्रम में निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी द्वारा हिंदी भाषा एवं साहित्य का परिचय एवं शैक्षिक समन्वयक प्रो. हरिशंकर द्वारा हिंदी भाषा की संरचना एवं भाषा तुलना प्रविधि, अनुसंधान एवं भाषा विकास विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अरिमर्दन कुमार त्रिपाठी द्वारा भाषाविज्ञान विषय पर विशेष व्याख्यान दिए गए। प्रो. सपना गुप्ता द्वारा शैक्षिक अध्ययन की कक्षाएँ ली गईं।

शेष पृष्ठ 7 पर

हिंदी-आका अध्येताकोश कार्यशाला

हिंदी-आका अध्येता कोश निर्माण संबंधी प्रथम कार्यशाला दिनांक 09.03.2026 से 13.03.2026 तक केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा (मुख्यालय) में निम्नलिखित विषय विशेषज्ञों के साथ आयोजित की गई। इस कार्यशाला में सुश्री संतिमों निमासो, श्री बिगा निमासो, (हुस्सो भाषा विशेषज्ञ), श्री आग्फो अग्लासो, प्रधान सचिव, अरुणाचल विकास परिषद, पश्चिम कमेंग यूनिट, अरुणाचल प्रदेश, श्रीमती अनु जेबीसो, ऑडिटर ए.एल.ए (आका लैंग्वेज अकेडमी) अ. प्र. एवं शोध संलाहकार सदस्य नार्थ ईस्टर्न इंस्टिट्यूट ऑफ लैंगवेज एण्ड कल्चर, गुवाहाटी, असम, श्री गानीदोन निमासो, TGT शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, श्री जीनो, अरुणाचल प्रदेश, ने भाग लिया। कार्यशाला के समापन सत्र के अवसर पर निदेशक महोदय प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने हिंदी आका अध्येता कोश के विषय संबंधी तत्यों के सूक्ष्म विश्लेषण एवं कार्यपद्धति पर विशेष चर्चा की साथ ही इस महत्तवपूर्ण कार्य के लिए शुभकामनाएँ दी।

शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक परिभ्रमण

विश्व की योग राजधानी के रूप में विख्यात ऋषिकेश में आयोजित आध्यात्मिक महाकुंभ में केंद्रीय हिंदी संस्थान के अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग की सहभागिता एक अत्यंत गौरवपूर्ण, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक रूप से समृद्ध अनुभव रही। 8 मार्च से प्रारंभ हुए इस भव्य उत्सव के उत्तरार्ध में 13 मार्च से 15 मार्च तक संस्थान के दल ने अपनी सक्रिय और गरिमामय उपस्थिति दर्ज कराई। इस विशेष शैक्षणिक भ्रमण कार्यक्रम में विभाग के लगभग 70 विदेशी विद्यार्थियों और अनुभवी शिक्षकों के समूह ने प्रतिभाग किया। दल का कुशल नेतृत्व विभागाध्यक्ष डॉ. जोगेन्द्र सिंह मीणा द्वारा किया गया साथ ही दल में विभागीय शैक्षणिक सदस्य डॉ. परमान सिंह, डॉ. शमा, डॉ. रिया सिंह, पर्यटन प्रभारी डॉ. अरविंद कुमार रावत, सह-पर्यटन प्रभारी श्री अरविंद शुक्ल तथा प्रशासनिक सहयोग हेतु श्री जितेंद्र सिंह एवं श्रीमती राधा कुशवाह सम्मिलित रहे। भ्रमण के प्रथम दिन 13 मार्च को संस्थान के अंतरराष्ट्रीय विद्यार्थियों को उत्तराखंड के माननीय मुख्यमंत्री और सुप्रसिद्ध गायक कैलाश खेर के सान्निध्य में भारतीय आध्यात्मिकता की जीवंत ऊर्जा को प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने का दुर्लभ अवसर प्राप्त हुआ। विद्यार्थियों ने योग के दर्शन और संगीत के समन्वय को आत्मसात किया तथा आध्यात्मिक गुरुओं के विचारों से लाभान्वित हुए। 14 मार्च को कार्यक्रम की गरिमा और अधिक बढ़ गई जब माननीय राज्यपाल महोदय ने समापन समारोह (कॉन्क्लूडिंग सेरेमनी) को संबोधित किया। राज्यपाल महोदय के उद्बोधन ने विद्यार्थियों को योग के वैश्विक शांति दूत के रूप में स्थापित होने और भारतीय जीवन पद्धति को समझने की विशेष प्रेरणा दी। उन्होंने योग को विश्व शांति और सद्भाव का आधार बताते हुए अंतरराष्ट्रीय विद्यार्थियों से इसे अपने देशों में प्रचारित करने का आह्वान किया।आगामी 21जून को आयोजित होने वाले 'अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस' के उपलक्ष्य में '100 दिवसीय कर्टन रेजर' कार्यक्रम का आयोजन 15 मार्च को किया गया। यह विशेष सत्र योग को केवल शारीरिक अभ्यास तक सीमित न रखकर उसे दैनिक जीवन की शैली बनाने की एक सामूहिक प्रतिज्ञा और प्रार्थना के रूप में उभरा। इसके पश्चात 'द योगा ऑफ लव' जैसे आध्यात्मिक सत्रों और गंगा तट पर आयोजित अलौकिक 'गंगा आरती' की पावन लहरों के साथ इस आठ दिवसीय उत्सव का विधिवत समापन हुआ और इस शैक्षणिक दल के सदस्यों और विद्यार्थियों ने परमार्थ निकेतन के अध्यक्ष स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी एवं साध्वी भगवती सरस्वती जी से विशेष भेंट कर आशीर्वाद एवं आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्राप्त किया।

यात्रा के अंतिम एवं महत्वपूर्ण चरण में 16 मार्च को दल ने हरिद्वार स्थित देव संस्कृति विश्वविद्यालय का विस्तृत भ्रमण किया और विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति डॉ. चिन्मय पंड्या जी से औपचारिक भेंट की। इस विशेष सत्र के दौरान विदेशी विद्यार्थियों ने विश्वविद्यालय के अद्वितीय शैक्षणिक मॉडल, भारतीय दर्शन, आयुर्वेद और मानवीय मूल्यों पर संवाद व चर्चा की। कुलपति महोदय के साथ हुई इस वार्ता ने विद्यार्थियों के मन में भारतीय संस्कृति के प्रति एक नई दृष्टि विकसित की। यह संपूर्ण दौरा न केवल सांस्कृतिक आदान-प्रदान का एक सशक्त माध्यम बना बल्कि अंतरराष्ट्रीय विद्यार्थियों के बीच हिंदी भाषा, योग विज्ञान और भारतीय 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना को और अधिक प्रगाढ़ करने में पूर्णतः सफल रहा। यह शैक्षणिक पर्यटन विद्यार्थियों के लिए ज्ञान, शांति और वैश्विक बंधुत्व का एक अनूठा संगम सिद्ध हुआ।

संपादकीय

"लला फिरी अइयो खेलन होरी"

प्रिय पाठकों,

भारतीय संस्कृति में होली एक पारंपरिक पर्व के साथ जीवन के विविध रंगों और मानवीय भावनाओं का सजीव उत्सव भी है। यह ऐसा अवसर है जो रंगों के माध्यम से मनुष्य अपने भीतर छिपी संवेदनाओं को अभिव्यक्त करता है। गत माह संपूर्ण देश ने हर्षोल्लास से रंगोत्सव मनाया। केंद्रीय हिंदी संस्थान के मुख्यालय सहित सभी केंद्रों पर देशी-विदेशी छात्रों के साथ समस्त अध्यापकों तथा कार्मिकों ने भी अपने हृदय की भावनाओं को एकरंग किया।

रंगों का यह त्योहार लोगों को आपसी भेदभाव, जाति, वर्ग और धर्म को भुलाकर एक-दूसरे के निकट आने की प्रेरणा देता है। वसंत ऋतु के आगमन के साथ मनाया जाने वाला यह उत्सव प्रकृति में नवजीवन और मानव जीवन में नई ऊर्जा का संचार करता है। धार्मिक दृष्टि से यह अच्छाई की बुराई पर विजय का संदेश देता है तथा सामाजिक रूप से भाईचारे और एकता को सुदृढ़ करता है। इसके साथ ही इस पर्व का साहित्यिक महत्त्व भी काम नहीं है। भारतीय साहित्य में भी होली का वर्णन अत्यंत समृद्ध और बहुआयामी रूप में मिलता है।

संस्कृत साहित्य में होली के अनेक रूपों का विस्तृत वर्णन है। श्रीमद्भागवत महापुराण में रसों के समूह 'रास' का वर्णन है। अन्य रचनाओं में 'रंग' नामक उत्सव का वर्णन है जिनमें हर्ष की 'प्रियदर्शिका' व 'रत्नावली' तथा कालिदास की 'कुमारसंभवम्' तथा 'मालविकाग्निमित्रम्' शामिल हैं। कालिदास रचित 'ऋतुसंहार' में पूरा एक सर्ग ही 'वसंतोत्सव' को अर्पित है। भारवि, माघ और अन्य कई संस्कृत कवियों ने वसंत की खूब चर्चा की है।

चंद बरदाई द्वारा रचित हिंदी के पहले महाकाव्य पृथ्वीराज रासो में होली का वर्णन है। अमीर खुसरो ने होली को आध्यात्मिक प्रेम और एकता के प्रतीक के रूप में वर्णित किया है, जिसमें उन्होंने अपने गुरू हजरत निजामुद्दीन औलिया को रंग-रंगीले अंदाज में याद किया है। उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना 'आज रंग है री मां, रंग है री' है। इस रचना में वे अपने आध्यात्मिक गुरू को ही अपना 'सजन' मानकर उनके आंगन में होली खेलने का वर्णन करते हैं जो सूफी और भारतीय संस्कृति के मिलन का प्रतीक है।

आदिकालीन कवि विद्यापति से लेकर भक्तिकालीन सूरदास, रहीम, रसखान, पद्माकर, जायसी, मीराबाई, कबीर और रीतिकालीन बिहारी, केशव, घनानंद आदि अनेक कवियों को यह विषय प्रिय रहा है। महाकवि सूरदास ने वसंत एवं होली का ऐसा वर्णन किया है जो साक्षात बिंबात्मकता सृजित करते हैं - *'हरि संग खेलति हैं सब फाग। इहिं मिस करति प्रगट गोपी उर अंतर को अनुराग।। सारी पहिरी सुरंग, कसि कंचुकी, काजर दे दे नैन। बनि बनि निकसी निकसी भई ठाढी, सुनि माधो के बैन।।* इसी प्रकार कवि रसखान भी गोपी की फागलीला प्रस्तुत करते हैं- *"फागुन लाग्यो जब तें तब तें ब्रजमण्डल में धूम मच्यौ है। नारि नवेली बचैं नहिं एक बिसेख यहै सबै प्रेम अच्यौ है।। सांझ सकारे वहि रसखानि सुरंग गुलाल ले खेल रच्यौ है। कौ सजनी निलजी न भई अब कौन भटू बिहिं मान बच्यौ है।।"* पद्माकर ने भी होली विषयक प्रचुर रचनाएँ की हैं जो आज भी मन मोह लेती हैं। इस विषय के माध्यम से कवियों ने जहाँ एक ओर नितान्त लौकिक नायक-नायिका के बीच खेली गई अनुराग और प्रीति की होली का वर्णन किया है, वहीं राधा-कृष्ण के बीच खेली गई प्रेम और छेड़छाड़ से भरी होली के माध्यम से सगुण साकार भक्तिमय प्रेम और निर्गुण निराकार भक्तिमय प्रेम का निष्पादन भी किया है।

आधुनिक हिंदी साहित्य में भी होली की परंपरा जीवित और प्रासंगिक बनी हुई है। प्रेमचंद की 'राजा हरदोल', तेजेंद्र शर्मा की 'एक बार फिर होली', ओम प्रकाश अवस्थी की 'होली मंगलमय हो' तथा स्वदेश राणा की 'होली' में फागोत्सव के अलग अलग रूप देखने को मिलते हैं। आधुनिक साहित्य में होली वर्ण उत्सवधर्मिता के साथ सामाजिक यथार्थ और समकालीन समस्याओं को उजागर करने का माध्यम बनता है। कई साहित्यकारों ने होली के बहाने समाज में व्याप्त विषमताओं, वर्गभेद और विडंबनाओं को उजागर किया है।

रंगों से इस उत्सव से हमें यह सीख लेनी चाहिए कि जीवन में भी विभिन्न परिस्थियाँ रंगों की तरह घुलती हैं और हमें उन सभी रंगों को अपनाकर सकारात्मकता के साथ जीना चाहिए। साहित्य में होली की जो छवि उभरती है वह हमें प्रेम, समरसता और मानवीय संवेदनाओं के महत्व का बोध कराती है। अतः हमें इस उत्सव को एक जीवंत सांस्कृतिक और साहित्यिक अभिव्यक्ति के रूप में स्वीकार करना चाहिए जिससे समाज में सौहार्द्र और मानवता के रंग सदैव जीवित रह सकें। अथ, कवि पद्माकर के इस मनमोहक होली वर्णन के साथ आप सभी को अनंत शुभकामनाएँ प्रेषित –

"फाग के भीर अभीरन में गहि गोविन्दै लै गई भीतर गोरी।
भाई करी मन की 'पद्माकर' ऊपर नाई अबीर की झोरी।
छीन पिताम्बर कम्मर ते सु बिदा दई मीड़ कपालन रोरी।
नैन नचाइ, कही मुसकाइ लला फिरी अइयो खेलन होरी।।"

निदेशक
प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी 'देशगव्हाणकर'

भावक पत्रिका का नवीन अंक प्रकाशित

भावक पत्रिका का नवीन अंक प्रकाशित होकर विभाग को मिला, जिसमें साहित्य एवं साहित्य चिंतन से संबंधित विभिन्न विषयों पर (19)विद्वानों के शोध आलेख प्रकाशित हुए। इस पत्रिका का संपादन प्रो. सपना गुप्ता द्वारा किया गया।

गवेषणा पत्रिका का नवीन अंक प्रकाशित

गवेषणा, अंक-142, (अक्टूबर-दिसंबर, 2025) प्रकाशित होकर विभाग में प्राप्त हुआ। इस अंक का संपादन कार्य प्रो. धनजी प्रसाद एवं सह-संपादन कार्य डॉ. अरिमर्दन कुमार त्रिपाठी द्वारा किया गया।

होली मिलन समारोह

केंद्रीय हिंदी संस्थान के अटल बिहारी वाजपेयी अंतरराष्ट्रीय सभागार में अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग एवं अध्यापक शिक्षा विभाग के संयुक्त संयोजन से होली कार्यक्रम धूमधाम से मनाया गया। इस कार्यक्रम में दीप प्रज्वलन अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग एवं अध्यापक शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्षों द्वारा किया गया जिसमें अध्यापक शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. चंद्रकांत कोठे ने होली पर्व का ऐतिहासिक महत्व बताते हुए कहा कि होली का त्योहार राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हम सभी को जोड़ता है तथा इस पर्व में हम सभी विभेदताओं को भूलकर एक रंग में रंग जाते हैं। इस कार्यक्रम में स्वदेशी एवं विदेशी विद्यार्थियों द्वारा रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। तदोपरांत संस्थान के सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं प्रशासनिक कार्मिकों ने आपस में मिलजुल कर होली खेली।

'उच्च शिक्षा में आईसीटी अनुप्रयोग' बहु-अनुशासनिक पुनश्चर्या पाठ्यक्रम का आयोजन

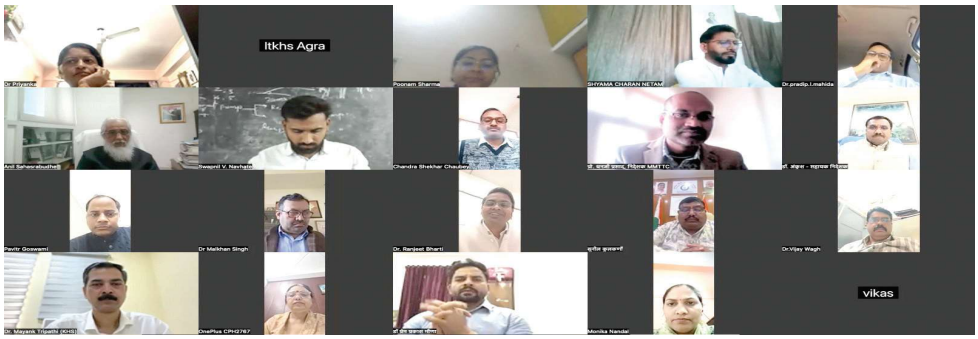

मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र (एमएमटीटीसी), केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा द्वारा 23 फरवरी से 07 मार्च 2026 तक बहु-अनुशासनिक पुनश्चर्या पाठ्यक्रम ₹उच्च शिक्षा में आईसीटी अनुप्रयोग₹ का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में देशभर से 111 प्रतिभागियों ने सहभागिता की। कार्यक्रम का उद्घाटन सत्र 23 फरवरी 2026 को आयोजित किया गया, जिसकी अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुलकर्णी ने की।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी फोरम के वर्तमान अध्यक्ष एवं राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद (नैक) के पूर्व अध्यक्ष प्रो. अनिल डी. सहस्रबुद्धे उपस्थित रहे। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि प्रो. सहस्रबुद्धे ने कहा कि आज के डिजिटल युग में उच्च शिक्षा में आईसीटी का समावेश अनिवार्य हो गया है। उन्होंने बताया कि वर्तमान समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), संवर्धित वास्तविकता (AR), आभासी वास्तविकता (VR) सहित अनेक अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियाँ उपलब्ध हैं, जिन्हें शिक्षकों को न केवल सीखना चाहिए, बल्कि अपने शिक्षण में प्रभावी रूप से उपयोग भी करना चाहिए। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत शिक्षकों का तकनीकी सशक्तिकरण ही गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की नींव है। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. सुनील बाबुराव कुलकर्णी ने कहा कि इन नवीन तकनीकों को केवल जानना पर्याप्त नहीं है, बल्कि इन्हें अपने जीवन और शिक्षण में व्यावहारिक रूप से अपनाना भी आवश्यक है। उन्होंने कहा कि शिक्षकों का यह दायित्व है कि वे स्वयं तकनीक में दक्ष होकर अपने विद्यार्थियों को भी इस दिशा में सक्षम बनाएँ।

उन्होंने बताया कि इस पुनश्चर्या पाठ्यक्रम का मूल उद्देश्य भी यही है कि शिक्षक आधुनिक तकनीकों से परिचित हों और उन्हें शिक्षा में समाहित करें। केंद्रीय हिंदी संस्थान सदैव शिक्षकों के व्यावसायिक विकास के लिए प्रतिबद्ध है। 23 फरवरी से 07 मार्च तक ऑनलाइन पद्धति से प्रतिदिन चार व्याख्यान आयोजित किए गए, जिनमें आईसीटी से संबंधित विविध विषयों पर विशेषज्ञों द्वारा प्रायोगिक परिचर्चा के साथ मार्गदर्शन किया गया। साथ ही प्रतिभागियों ने अपनी-अपनी रुचि के विषयों पर आलेख लिखे और परीक्षा भी दी। कार्यक्रम का समापन 07 मार्च 2026 को हुआ, जिसमें के.सी.ई. सोसाइटी के प्रबंधन एवं अनुसंधान संस्थान, जलगाँव के पूर्व निदेशक प्रो. भाऊसाहेब व्यंकटराव पवार एवं डॉ. विकास कुमार पाठक मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

समापन सत्र में प्रो. भाऊसाहेब व्यंकटराव पवार ने कहा कि इस कार्यक्रम का आयोजन अत्यंत प्रभावशाली ढंग से किया गया है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि प्रतिभागी इस कार्यक्रम में अर्जित ज्ञान और कौशल को अपने-अपने संस्थानों में व्यवहार में लाएँगे तथा शिक्षण को और अधिक तकनीकी एवं प्रभावी बनाएँगे।

डॉ. विकास कुमार पाठक ने कहा कि भारत सरकार आज तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए अनेक महत्वपूर्ण कदम उठा रही है। अनुवादिनी जैसे AI-आधारित भारतीय उपकरणों का विकास इसी दिशा में एक सराहनीय प्रयास है। उन्होंने कहा कि इस पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में प्रतिभागियों ने जो तकनीकी उपकरण सीखे हैं, उनका उपयोग केवल स्वयं तक सीमित न रखकर अपने विद्यार्थियों तक भी पहुँचाना चाहिए, ताकि भारत का युवा वर्ग तकनीकी दृष्टि से और अधिक सक्षम बन सके।

हिंदी लोक शब्दकोश निर्माण कार्यशाला

केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा के अनुसंधान एवं भाषा विकास विभाग द्वारा हिंदी लोक शब्दकोश निर्माण के लिए शब्द-संकलन हेतु एक कार्यशाला दिनांक 23-03-2026 से 27-03-2026 (पाँच दिवसीय) का आयोजन किया गया।

कार्यशाला की अध्यक्षता शैक्षिक समन्वयक प्रो. हरिशंकर द्वारा किया गया उन्होंने आमंत्रित विद्वानों का स्वागत कर कार्यशाला के सफल आयोजन की कामना की जिसमे उनका सहयोग अनुसंधान एवं भाषा विकास के विभागाध्यक्ष डॉ. अरिमर्दन कुमार त्रिपाठी ने किया।

कार्यशाला में छत्तीसगढ़ के भाषा विद्वानों तथा विशेषज्ञों को आमंत्रित किया जिसमें प्रो. सुधीर शर्मा, श्री अरुण कुमार निगम, श्री मनीराम साहू' मितान', डॉ. तृषा शर्मा, डॉ. पीसी लाल यादव द्वारा लगभग 3000 छत्तीसगढ़ी शब्द संकलन किया गया।

कार्यशाला समापन की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने की उन्होने कार्यशाला के सफल आयोजन की हार्दिक शुभकामनाएँ दी तथा छत्तीसगढ़ी लोक शब्दकोश के संपादक प्रो. सुधीर शर्मा को चुना अंत में विद्वानों को प्रमाण-पत्र प्रदान कर कार्यशाला का समापन किया गया।

भविष्य के राष्ट्रनिर्माता हैं शिक्षक

केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र ने दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, कॉलेज ऑफ प्रचारक विद्यालय, (बी.एड.), माचवरम, विजयवाडा के बी.एड्. प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के छात्रों के प्रशिक्षण के लिए दि. 02.03.2026 से दि. 14.03.2026 तक 16वाँ हिंदी भाषा संचेतना शिविर आयोजित किया। इस शिविर का उद्घाटन दिनांक 02.03.2026 को किया गया। इस उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि श्री पी. वेंकटस्वामी, इंस्पेक्टर पोस्ट्स (सी. एंड पी.जी.), ऑफिस सीनियर सुपरिटेंडेंट ऑफ़ पोस्ट ऑफिस, विजयवाड़ा डिवीज़न, विजयवाड़ा एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, प्रचारक प्रशिक्षण महाविद्यालय, बीएड, विजयवाडा, आंध्र प्रदेश के प्राचार्य डॉ. शेख जुबेर अहमद उपस्थित थे। इस अवसर पर पाठ्यक्रम संयोजक क्षेत्रीय निदेशक, डॉ. फत्तराम नायक, डॉ. संदीप कुमार एवं डॉ. सी. कामेश्वरी उपस्थित रहीं। इस कार्यक्रम में कुल 57 (महिला-40, पुरुष-17) प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

इस शिविर का समापन दिनांक 14.03.2026 को किया गया। समापन समारोह की अध्यक्षता प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ने की। मुख्य अतिथि के रूप में आरएचवी हाईस्कूल, विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश के प्राचार्य श्री वेणु गोपाल शर्मा, विशिष्ट अतिथि के रूप में हिंदी प्रचारक प्र. महाविद्यालय, विजयवाड़ा की प्राचार्या डॉ. शेख जुबेर अहमद उपस्थित थे। इस अवसर पर पाठ्यक्रम संयोजक क्षेत्रीय निदेशक, डॉ. फत्तराम नायक, डॉ. दीपेश व्यास एवं डॉ. सी. कामेश्वरी उपस्थित रहीं। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने कहा कि आप सभी भविष्य के शिक्षक हैं। इस प्रशिक्षण के दौरान आपको पठन-पाठन का प्रशिक्षण दिया गया है, जो आपके लिए भविष्य में बहुत उपयोगी साबित होगा। जब आप पाठशालाओं में बच्चों को पढ़ाने जाएँगे तो इस बात का ध्यान रखें कि आपकी मातृभाषा का प्रभाव आपके हिंदी पढ़ाने में न पड़े क्योंकि आप जैसा पढ़ाएँगे वैसा ही बच्चे सीखेंगे। भविष्य के राष्ट्र निर्माता आप हैं। इस कार्यक्रम का संचालन बिमल पोढ़ एवं साज़िया खातून द्वारा एवं धन्यवाद ज्ञापन पिकुन कुमार बेहरा द्वारा किया गया। इस पाठ्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों ने हस्तलिखित पत्रिका 'हिंदी संगम' की रचना की। समापन समारोह के दौरान अतिथियों द्वारा हस्तलिखित पत्रिका का लोकार्पण किया गया।

प्रतिभागियों को अतिथियों के द्वारा प्रमाण पत्र वितरित किए गए। पर-परीक्षण के आधार पर उत्तम अंक प्राप्त छात्रों को विशेष पुरस्कार दिए गए। षेक अनिस फातिमा को प्रथम पुरस्कार, यद्दनपूडि सुष्मा को द्वितीय पुरस्कार, थबीर यादव को तृतीय पुरस्कार प्रदान किए गए। विश्वजीत बेहरा को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया।

इस पाठ्यक्रम के समापन समारोह में प्रतिभागियों द्वारा अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। पाठ्यक्रम से संबंधित प्रतिक्रिया प्रतिभागी षेक अनिस फातिमा, निहारिका सा, शुभम दंडसेना एवं सूर्यप्रताप महांति द्वारा दी गईं। प्रतिभागियों द्वारा सामूहिक नृत्य, सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए संस्थान परिवार का भरपूर सहयोग रहा। अंत में राष्ट्रगान से कार्यक्रम का समापन हुआ।

राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण है युवाओं की भूमिका: निदेशक

494वाँ नवीकरण पाठ्यक्रम

केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा महाराष्ट्र राज्य के वाशिम जिले के हिंदी अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए दिनांक 16.03.2026 से 28.03.2026 तक 494वाँ नवीकरण पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। जिसका उद्घाटन समारोह दि. 16.03.2026 को संपन्न हुआ। यह कार्यक्रम केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम के संयोजक केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. फत्तराम नायक, डॉ. दीपेश व्यास अतिथि प्रवक्ता, डॉ. एस. राधा, श्री के. इंद्रा एवं श्री शेख मस्तान वली उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में कुल 26 (महिला-02, पुरुष-24) प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने कहा कि हिंदी साहित्य को समृद्ध करने में महाराष्ट्र के साहित्यकारों का भी बहुत बड़ा योगदान रहा है। हिंदी एवं मराठी दोनों ही भाषाओं की लिपि देवनागरी है। इस समानता के कारण दोनों का साहित्य एक जैसा प्रतीत होता है। खास तौर पर नाटकों का मंचन एक जैसा ही देखने को मिलता है। इस पाठ्यक्रम से आपकी जो अपेक्षाएँ हैं उनको प्रशिक्षक शिक्षकों द्वारा पूर्ण करने का पूरा प्रयास किया जाएगा। जब आप इस प्रशिक्षण को प्राप्त कर अपने छात्रों के बीच जाएँगे, तो उन्हें भी आप के अंदर एक नई ऊर्जा दिखाई देनी चाहिए।

इस पाठ्यक्रम के समापन समारोह दि. 28.03.2026 को संपन्न हुआ। यह कार्यक्रम केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में, मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी के हिंदी विभाग के प्रो. दोड्डा शेषु बाबु उपस्थित रहे। इस अवसर पर पाठ्यक्रम संयोजक केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. फत्तराम नायक, डॉ. दीपेश व्यास, डॉ. राजीव कुमार सिंह एवं स्थानीय समाजसेवी बी. शंकर उपस्थित थे।

अध्यक्षीय वक्तव्य में केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने कहा कि राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका सबसे अहम है देश में हिंदी भाषा को लेकर बहुत राजनीति हो रही है किंतु हिंदी एक ऐसा माध्यम है जो सभी को एक माला में पिरोकर रख सकती है। एक सच्चा शिक्षक अपने छात्रों के अंदर छिपी हुई प्रतिभाओं को निखारता है और ज्ञान के माध्यम से उनके जीवन के मार्ग को प्रशस्त करता है। इसीलिए गुरु को ईश्वर से भी उच्च स्थान दिया गया है। क्योंकि ईश्वर को प्राप्त करने का मार्ग गुरु ही बताता है।

मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. दोड्डा शेषु बाबु ने कहा कि भारत विविधताओं का देश है। यहाँ बोली जाने वाली भाषाएँ भिन्न-भिन्न हैं किंतु हिंदी सभी को जोड़ने का कार्य करती है। आप जिन बच्चों को तैयार करते हैं उन्हें केवल हम उच्च शिक्षा के माध्यम से पल्लवित करते हैं। देश के भावी नागरिकों का निर्माण प्राइमरी एवं माध्यमिक शिक्षकों के द्वारा ही किया जाता है, जो आगे चलकर डॉक्टर, इंजिनियर और राजनेता बनकर देश के विकास में अपना योगदान देते हैं। इस कार्यक्रम का संचालन कु. रेखा तुळशिराम करंगे एवं कु. पुजा द. भोयर एवं आभार ज्ञापन प्रशांत महादेव शिंदे द्वारा किया गया। इस पाठ्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों ने हस्तलिखित पत्रिका स्वत्सगुल्म नगरी : वाशिम जिलाह की रचना की। समापन समारोह के दौरान अतिथियों द्वारा हस्तलिखित पत्रिका का लोकार्पण किया गया। प्रतिभागियों को अतिथियों के द्वारा प्रमाण पत्र वितरित किए गए। पर-परीक्षण के आधार पर उत्तम अंक प्राप्त छात्रों को विशेष पुरस्कार दिए गए। समाधान अशोक गुडदे को प्रथम पुरस्कार, नरेश विजय चव्हाण को द्वितीय पुरस्कार, गजानन काशिराम चौधरी को तृतीय पुरस्कार प्रदान किए गए। कु. पुजा दत्तात्रय भोयर एवं कु. रेखा तुळशिराम करंगे को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया।

दिल्ली केंद्र

होली मिलन समारोह

दिनांक 03 मार्च 2026 को दिल्ली केंद्र पर होली का सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर संस्थान के सभी विद्यार्थी, अध्यापक और प्रशासनिक सदस्य उपस्थित थे। कार्यक्रम के आरंभ में केंद्र की क्षेत्रीय निदेशक प्रो. अपर्णा सारस्वत ने सभी विदेशी विद्यार्थियों को होली का विस्तृत महत्व बताया। इसके बाद विद्यार्थियों के साथ मिलकर अध्यापकों ने भी होली के गीत प्रस्तुत किए।

उपस्थित सभी ने एक दूसरे को गुलाल लगाया और फूलों की पंखुड़ियों से होली मनाई। अंत में सभी ने होली की पारंपरिक मिठाई गुजिया का आनंद लिया। कार्यक्रम का समापन समूह चित्र लेकर किया गया।

शिलांग केंद्र

'समन्वय पूर्वोत्तर' पत्रिका का लोकार्पण

केंद्रीय हिंदी संस्थान, क्षेत्रीय केंद्रः शिलांग द्वारा पूर्वोत्तर एवं पूर्वी भारत की भाषा, साहित्य और संस्कृति को समर्पित त्रैमासिक पत्रिका 'समन्वय पूर्वोत्तर' के खंड-10, अंक-1, जनवरी-मार्च, 2026 का लोकार्पण केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा एवं हिंदी विभाग, मिजोरम विश्वविद्यालय, आइजोल के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक एवं पत्रिका के प्रधान संपादक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी तथा संपादक एवं शिलांग केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय, मिजोरम विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. दिवाकर चंद्र डेका, पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय के सम-कुलपति प्रो. किरण हाजरिका, मिजोरम विश्वविद्यालय के मानविकी संकाय के अध्यक्ष प्रो. सुशील कुमार शर्मा, हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. संजय कुमार एवं विभाग के सह-आचार्य डॉ. अमिष वर्मा के कर कमलों द्वारा किया गया।

इस अवसर पर 'समन्वय पूर्वोत्तर' पत्रिका के प्रधान संपादक एवं केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. बाबुराव कुळकर्णी ने देशभर में हिंदी के साथ-साथ स्थानीय भाषाओं के साहित्य के संरक्षण, संवर्धन एवं समन्वय हेतु केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा किए जा रहे कार्यों से विद्वानों को अवगत कराया तथा पूर्वोत्तर क्षेत्र में प्रवास के दौरान अपने सुखद अनुभवों को भी व्यक्त किया। इस कार्यक्रम में पत्रिका के संपादक एवं क्षेत्रीय निदेशक प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय ने पत्रिका के नवीन अंक की उपादेयता को प्रकट किया तथा पूर्वोत्तर क्षेत्र में हिंदी भाषा के साथ-साथ स्थानीय भाषाओं के समन्वय में इस पत्रिका के महत्व को प्रस्तुत किया। उन्होंने सभी भाषा एवं संस्कृति प्रेमियों से 'समन्वय पूर्वोत्तर' पत्रिका के साथ जुड़कर 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की वृहत्तर संकल्पना को साकार करने का आह्वान किया। इस कार्यक्रम में उपस्थित अन्य अतिथियों ने भी पत्रिका द्वारा किए जा रहे सार्थक प्रयासों की सराहना की तथा इससे जुड़ने की प्रतिबद्धता दुहराई।

दीमापुर केंद्र

पूर्वोत्तर का आदिवासी समाज साहित्य, संस्कृति और परंपरा

हिंदी विभाग, नागालैंड विश्वविद्यालय द्वारा पूर्वोत्तर का आदिवासी समाज साहित्य, संस्कृति और परंपरा विषय पर 19-20 मार्च 2026 को आयोजित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में केंद्रीय हिंदी संस्थान (आगरा), दीमापुर केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. थुन्बुई को वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया।

संगोष्ठी में उन्होंने नागालैंड की जनजातियों की सामाजिक एवं सांस्कृतिक परंपरा पर एक विहंगम दृश्य प्रस्तुत करते हुए जेलियांग जनजाति के बारे में विशेष रूप से प्रकाश डाला। जेलियांग लोक साहित्य पर बोलते हुए उन्होंने बताया कि यहाँ के लोक गीत एवं लोक कथाएँ ही इनके लोकसाहित्य के आधार हैं, जो मौखिक रूप में न जाने कितने वर्षों से सामाजिक चेतना का वहन करते हुए पीढ़ी दर पीढ़ी को हस्तांतरित होते आए हैं। लोक गीतों पर शोधपरक व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए वक्ता ने कहा कि यदि इन गीतों पर सही ढंग से शोध किया जाए तो विभिन्न प्रकार के गीतों को साहित्य-जगत में उजागर किया जा सकता है। जेलियांग गीतों के वर्गीकरण पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि इन लोक गीतों को विभिन्न आयोजनों में गाए जाने के समय, उनके भाव, गायकों की संख्या, गायकों की अवस्था तथा गायन के विविध रूपों के आधार पर कई वर्गों में वर्गीकृत किए जा सकते हैं। लोकगीतों की दृष्टि से जेलियांग लोकसाहित्य अत्यंत समृद्ध एवं संपन्न माना जाता है। इनमें एक ओर जहाँ भावगांभीर्य की महत्ता है, वहीं अत्यंत विस्तृत क्षेत्र में जीवन के अनेक अनुभवों को उसमें लोक ने पिरोया हुआ है और उन गीतों को गाते हुए लोग अपने जीवन के अनेक अछूते पहलुओं को भी अनुभव करने लगते हैं।

भुवनेश्वर केंद्र

लघुबजटीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा तथा महाकवि जयशंकर प्रसाद ट्रस्ट, अलीगंज, लखनऊ के संयुक्त तत्वावधान में दि. 16 एवं 17 मार्च, 2026 को 'महाकवि जयशंकर प्रसाद साहित्य-संस्कृति-महोत्सव-2026' विषय पर दो दिवसीय लघुबजटीय राष्ट्रीय संगोष्ठी विश्वभारती विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन बोलपुर, पश्चिम बंगाल में आयोजित किया गया। इस संगोष्ठी में शैक्षिक सहभागिता हेतु भुवनेश्वर केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. रंजन कुमार दास प्रतिनियुक्त थे साथ ही विवेकानंद विश्वकर्मा, लिपिक को संगोष्ठी से संबंधित वित्तीय भुगतान /समायोजन कार्य हेतु प्रतिनियुक्त किया गया था।

पंडित विद्यानिवास मिश्र का साहित्यिक सरोकार

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा एवं हिंदी विभाग, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक : 9-10 मार्च, 2026 को आयोजित द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 'पंडित विद्यानिवास मिश्र का साहित्यिक सरोकार' में क्षेत्रीय निदेशक प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय को सम्मानित अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता प्रो. सुमारबिन उमडोर, सम-कुलपति, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग ने की।

ऋषिकेश में आयोजित आध्यात्मिक महाकुंभ में केंद्रीय हिंदी संस्थान के लगभग 70विदेशी विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया।

महिला दिवस कार्यक्रम में संस्थान की महिलाओं को सम्मानित करते हुए संस्थान के निदेशक, शैक्षिक समन्वयक, विभागाध्यक्ष, कुलसचिव।

केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा के मुख्यालय पर नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग द्वारा गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद के बी.एड. के प्रशिक्षणार्थियों हेतु हिंदी भाषा संवर्धनात्मक पाठ्यक्रम संचालित किया गया।

विजयी प्रतिभागियों के साथ के. हिं. सं. के निदेशक, अध्यापक शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष तथा शिक्षक एवं मार्गदर्शक।

पृष्ठ 2 का शेष

डॉ. मीनाक्षी दुबे द्वारा हिंदी भाषा एवं साहित्य का परिचय की कक्षाएँ ली गई। डॉ. अनामिका गुप्ता द्वारा हिंदी भाषा की संरचना एवं भाषा तुलना प्रविधि एवं भाषा विज्ञान की कक्षाएँ ली गईं। डॉ. शिखा माहेश्वरी द्वारा अन्य भाषा हिंदी शिक्षण और हिंदी भाषा परिमार्जन की कक्षाएँ ली गई। प्रशिक्षणार्थियों ने अवकाश दिवसों में आगरा, मथुरा, वृंदावन के स्थानीय ऐतिहासिक स्थलों का शैक्षिक संदर्शन किया।

पाठ्यक्रम का समापन समारोह दिनांक 19.03.2026 को प्रो. हरिशंकर, समन्वयक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा की अध्यक्षता में सरस्वती माँ की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर किया गया। उन्होंने गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद से आए प्रशिक्षणार्थियों को अधिक मेहनत करने एवं आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

अंत में, भविष्य की सुखद कामना करते हुए एवं आशीर्वचन देते हुए प्रतिवेदन भी प्रस्तुत किया तथा परीक्षा में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रशिक्षणार्थियों को पुरस्कृत किया। कार्यक्रम में पूर्वोत्तर शिक्षण सामग्री निर्माण विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. मीनाक्षी दुबे और अनुसंधान एवं भाषा विकास विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अरिमर्दन कुमार त्रिपाठी की गरिमामयी उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अनामिका गुप्ता, असिस्टेंट प्रोफेसर, नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग द्वारा किया गया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान द्वारा किया गया।

शब्दवार्ता

"सशक्त"

'सशक्त' शब्द 'स' (अर्थात् साथ या युक्त) तथा 'शक्ति' (बल, सामर्थ्य, क्षमता) से मिलकर बना है। इसका शाब्दिक अर्थ है वह जो शक्ति से युक्त हो अर्थात् जिसमें किसी कार्य को करने की पूर्ण क्षमता और योग्यता हो। यह शब्द शारीरिक बल तक सीमित न होकर मानसिक, बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक तथा आर्थिक सभी प्रकार की शक्तियों को समाहित करता है। सशक्त व्यक्ति वह होता है जो आत्मविश्वास से परिपूर्ण हो, अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त कर सके और जीवन की चुनौतियों का साहसपूर्वक सामना करे। सशक्तता अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होकर उनका सही उपयोग करने और अपने कर्तव्यों का पालन करने में भी निहित है।

प्रतिवर्ष 8 मार्च माह में मनाया जाने वाला अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस 'सशक्त' शब्द को एक विशेष और व्यापक अर्थ प्रदान करता है। यह दिवस महिलाओं के अधिकारों, समानता और आत्मनिर्भरता के महत्व को उजागर करता है। महिला सशक्तिकरण का उद्देश्य महिलाओं को शिक्षा, सम्मान, अवसर और निर्णय लेने की स्वतंत्रता प्रदान करना है ताकि वे समाज में अपनी पहचान स्थापित कर सकें। आज के समय में महिलाएँ हर क्षेत्र में अपनी क्षमता का परिचय दे रही हैं जो सशक्तता का जीवंत उदाहरण है। 'सशक्त' शब्द केवल एक विशेषण नहीं, एक प्रेरणादायी विचार है जो व्यक्ति विशेषकर महिलाओं को अपनी आंतरिक शक्ति को पहचानने, उसे विकसित करने और समाज में समान एवं सम्मानजनक स्थान प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है।

प्रस्तुति - डॉ. शिवानी चौहान

प्रकाशन विभाग

संस्थान प्रकाशनों की बिक्री से संबंधित भुगतान को ऑनलाइन स्वीकार करने की सुविधा उपलब्ध है इसके लिए पृथक से खाता खोला गया है। क्यू आर कोड के माध्यम से भी भुगतान किया जा सकता है। खाता विवरण इस प्रकार है-

Account Holder's Name:
THE KENDRIYA
HINDI SHIKSHANA MANDAL AGRA
Account Number : 42583260224
IFSC : SBIN0017686
MICR : 282002047
Branch : KHANDARI CROSSING AGRA

नोट: 1. संस्थान की प्रकाशन सूची संस्थान वेबसाईट www.hindisansthan.in पर उपलब्ध है।
2. सूची में से चयनित पुस्तकों का क्रयादेश ई-मेल publicationmanagerkhs@gmail.com पर भेजा जा सकता है।

Merchant Name :
THE KENDRIYA HINDI SHIKHSANA MANDAL
UPI ID : thekhsmagra@sbi

“तकनीक के स्पर्श से समृद्ध होती हिंदी की अभिव्यक्ति”

प्रोफ़ेसर पूरनचंद टंडन हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय से सेवानिवृत आचार्य हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय तथा अन्य महत्वपूर्ण संस्थानों 35 वर्षों से अधिक अध्यापन सेवा करने के साथ-साथ टंडन जी भारतीय अनुवाद परिषद् के संस्थापक भी हैं जहाँ के अनेक छात्र अनुवाद के क्षेत्र में शिक्षा ग्रहण कर उच्च पदों पर पहुँचे हैं। वे हिंदी विशेषज्ञ के रूप में भारत सरकार की अनेक समितियों में विशेषज्ञ रहे हैं। साहित्य भूषण, साहित्य महोपाध्याय, साहित्य शिरोमणि, महात्मा गाँधी सम्मान, मॉरीशस जैसे अनेक सम्मानों से विभूषित हैं। संस्थान समाचार के पाठकों के लिए प्रो. पूरनचंद टंडन जी से डॉ. शिवानी चौहान ने बातचीत की है। प्रस्तुत है बातचीत के प्रमुख अंश...

प्रश्न- सूचना एवं संचार माध्यम और राजभाषा हिंदी का अन्तः संबंध कैसे समझा जा सकता है?

उत्तर -राजभाषा हिंदी के संदर्भ में सूचना प्रौद्योगिकी का महत्व अत्यंत बढ़ गया है। आधुनिक युग में सरकारी कार्यालयों, संस्थानों और जनसाधारण के बीच संवाद को सुगम और प्रभावी बनाने के लिए हिंदी भाषा को डिजिटल माध्यमों पर सशक्त बनाना आवश्यक है। सूचना प्रौद्योगिकी के विकास से हिंदी में सरकारी दस्तावेज़, वेबसाइट, पोर्टल, और विभिन्न सेवाएँ उपलब्ध कराई जा रही हैं, जिससे हिंदी को राजभाषा के रूप में और अधिक मजबूती मिल रही है। इसके अलावा, कंप्यूटर और इंटरनेट पर हिंदी का प्रभावी उपयोग राजभाषा के प्रचार-प्रसार और आम जनता तक पहुँच सुनिश्चित करने में सहायक है। इसलिए, सूचना प्रौद्योगिकी हिंदी को राजभाषा के रूप में विकसित करने और उसका व्यापक प्रयोग बढ़ाने में अहम भूमिका निभा रही है।

प्रश्न - अमूमन ऐसा माना जाता है कि कंप्यूटर पर हिंदी भाषा में कार्य करना अंग्रेजी की अपेक्षा कठिन है। यह धारणा बनने के क्या कारण है? यह किस हद तक सही है?

उत्तर -इस धारणा के बनने के कई कारण हैं। पहले, कंप्यूटर और सॉफ्टवेयर अधिकांशतः अंग्रेजी भाषा पर आधारित थे, इसलिए हिंदी में सही टाइपिंग, फॉन्ट, और यूनिकोड सपोर्ट की कमी थी। हिंदी टाइपिंग के लिए मानकीकृत कीबोर्ड लेआउट और तकनीकी संसाधनों का अभाव भी इसे जटिल बनाता था। इसके अलावा, हिंदी में तकनीकी शब्दावली और सॉफ्टवेयर उपलब्धता सीमित होने से उपयोग में परेशानी होती थी। हालांकि, आधुनिक तकनीक के विकास और बेहतर हिंदी सपोर्ट वाले टूल्स के आने से अब हिंदी में कंप्यूटर पर कार्य करना पहले से काफी आसान हो गया है। इसलिए, यह धारणा आंशिक रूप से सही थी, लेकिन आज के समय में तकनीकी सुधारों की वजह से हिंदी में काम करना उतना कठिन नहीं रहा।

प्रश्न - राजकीय स्तर पर विकसित आईसीटी टूल्स में व्याप्त भाषाई समस्याओं को किस प्रकार सुलझाया जा सकता है ?

उत्तर -भाषा संबंधित टूल्स में व्याप्त भाषाई समस्याओं को सुलझाने के लिए तकनीकी सुधार, भाषाई विविधता की समझ और मानकीकरण की दिशा में प्रयास आवश्यक हैं। सबसे पहले, मशीन लर्निंग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की सहायता से टूल्स को अधिक संवेदनशील और संदर्भ-संगत बनाया जा सकता है, जिससे वे भाषा के व्याकरण, वर्तनी और भावार्थ को बेहतर तरीके से समझ सकें। द्विभाषी और बहुभाषी शब्दकोशों व कॉर्पस का निर्माण कर ट्रांसलेशन टूल्स की गुणवत्ता बढ़ाई जा सकती है। क्षेत्रीय भाषाओं और बोलियों को भी इन टूल्स में समाहित करने से भाषा विविधता को सम्मान मिलेगा और उपयोगकर्ता अनुभव बेहतर होगा। साथ ही, उपयोगकर्ता से प्राप्त फीडबैक के आधार पर टूल्स को लगातार अपडेट करना भी आवश्यक है। इन सभी उपायों से भाषा टूल्स की सटीकता, उपयोगिता और विश्वसनीयता में सुधार किया जा सकता है।

प्रश्न - भाषा संबंधित टूल्स के निर्माण में संलग्न आईटी संस्थानों में भाषा विशेषज्ञों का संयोजन किस प्रकार किया जा सकता है?

उत्तर -आईटी संस्थानों में भाषा विशेषज्ञों का संयोजन भाषा संबंधित टूल्स के निर्माण में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। इसके लिए तकनीकी और भाषाई विशेषज्ञों के बीच समन्वय को संस्थागत रूप से बढ़ावा देना आवश्यक है। इंटरडिसिप्लिनरी टीमों का गठन कर तकनीकी विशेषज्ञों और भाषाविदों को एक साथ काम करने का अवसर दिया जा सकता है, जिससे टूल्स अधिक उपयोगकर्ता-केंद्रित और सटीक बनते हैं। भाषा विशेषज्ञ डेटा क्यूरेशन, एनोटेशन, शब्दकोश निर्माण और भाषायी मॉडलिंग में अहम भूमिका निभा सकते हैं। वे यूज़र इंटरफेस के स्थानीयकरण, अनुवाद की गुणवत्ता, तथा सांस्कृतिक-सामाजिक संवेदनशीलता को सुनिश्चित करने में भी सहायता करते हैं। इसके अलावा, अनुसंधान परियोजनाओं में उनका सहयोग नवाचार को बढ़ावा दे सकता है, जैसे संवाद प्रणालियाँ (चैटबोट्स), स्वचालित अनुवाद, वाक् पहचान आदि। आईटी संस्थान भाषा विशेषज्ञों के लिए तकनीकी प्रशिक्षण, इंटर्नशिप या लघु कोर्सेस आयोजित कर सकते हैं, जिससे वे तकनीकी भाषा और टूल निर्माण की प्रक्रियाओं से भलीभांति परिचित हो सकें।

प्रश्न- आर्टिफिशल इन्टेलिजन्स आधारित आईसीटी टूल्स का उपयोग हिंदी को ग्लोबल स्वरूप देने में कैसे लाभकारी सिद्ध हो सकता है?

उत्तर -बिल्कुल, एआई आधारित आईसीटी टूल्स हिंदी को ग्लोबल स्वरूप देने में और भी कई तरीकों से मददगार हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, ये टूल्स बड़ी मात्रा में हिंदी डेटा का विश्लेषण कर भाषा के नए पैटर्न और ट्रेंड्स को समझ सकते हैं, जिससे भाषा का विकास और मानकीकरण आसान होगा।

AI की मदद से हिंदी शिक्षण को भी अधिक इंटरएक्टिव और व्यक्तिगत बनाया जा सकता है, जिससे दुनियाभर के लोग आसानी से हिंदी सीख सकें। साथ ही, AI आधारित कंटेंट जनरेशन टूल्स हिंदी में गुणवत्ता पूर्ण लेख, समाचार, और मनोरंजन सामग्री का निर्माण कर डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर हिंदी की उपस्थिति बढ़ा सकते हैं। यह तकनीक हिंदी भाषी स्टार्टअप्स और उद्यमियों को भी अपने उत्पादों को बेहतर बनाने और वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धा करने में सहायता प्रदान करेगी।

प्रश्न- हिंदी भाषा के शिक्षण, टंकण और अनुवाद संबंधी टूल्स की जानकारी एक स्थान पर उपलब्ध कराने वाले एकीकृत प्लेटफॉर्म (कोई एप या वेबसाइट) का विकास कैसे किया जा सकता है?

उत्तर -हिंदी के टूल्स को एक वेबसाइट या एप के माध्यम से एक ही प्लेटफॉर्म पर लाने के लिए सबसे पहले एक यूजर-फ्रेंडली और इंटीग्रेटेड डिज़ाइन तैयार करना जरूरी है, जो विभिन्न टूल्स को सहजता से उपलब्ध कराए। इस प्लेटफॉर्म में हिंदी टाइपिंग (कीबोर्ड, वॉइस इनपुट), अनुवाद, स्पीच रिकग्निशन, ग्रामर चेक, ऑटो करेक्ट, टेक्स्ट-टू-स्पीच और कॉर्पस आधारित खोज जैसे फीचर्स शामिल किए जा सकते हैं।

इसके लिए बैकएंड में AI और NLP तकनीकों का इस्तेमाल किया जाना चाहिए ताकि टूल्स की कार्यक्षमता उच्च गुणवत्ता वाली और तेज़ हो। वेबसाइट या एप को मल्टीडिवाइस सपोर्ट देना जरूरी है ताकि मोबाइल, टैबलेट और कंप्यूटर पर आसानी से उपयोग किया जा सके। उपयोगकर्ताओं को पंजीकरण और प्राइवेसी का विकल्प देना चाहिए जिससे उनकी व्यक्तिगत सेटिंग्स और प्रेफरेंस सेव हो सकें। साथ ही, उपयोगकर्ताओं से फीडबैक लेकर टूल्स को निरंतर अपडेट और बेहतर बनाया जा सकता है।

प्रश्न- क्या आप हिंदी / भारतीय भाषाओं में तकनीकी संयोजन हेतु कार्यरत महत्वपूर्ण संस्थाओं/विशेषज्ञों से संपर्क करने की संस्तुति देना चाहेंगे?

उत्तर- जी हाँ, हिंदी और भारतीय भाषाओं में तकनीकी संयोजन हेतु कार्यरत महत्वपूर्ण संस्थाओं और विशेषज्ञों से संपर्क करना अत्यंत लाभकारी होता है।

इससे शोध, विकास और परियोजनाओं में नवीनतम तकनीकी जानकारियाँ, मार्गदर्शन और सहयोग प्राप्त होता है। इसके अलावा, यह नेटवर्किंग भाषा से जुड़ी समस्याओं के समाधान में भी मददगार साबित होती है।

आप भाषा प्रौद्योगिकी केंद्र, राष्ट्रीय भाषा संसाधन और विकास केंद्र केंद्रीय हिंदी संस्थान, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के भाषा शोध विभाग, तथा अन्य अनुसंधान संस्थानों से संपर्क कर सकते हैं। विशेषज्ञों के साथ संवाद से आपके कार्य की गुणवत्ता बढ़ेगी और नई तकनीकों को अपनाने में आसानी होगी।

संरक्षक
प्रो. सुरेन्द्र दुबे

प्रधान संपादक
प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी

संपादक
डॉ. अपर्णा सारस्वत

संपादन सहायक
डॉ. शिवानी चौहान

टाइप सेटिंग
योगेन्द्र सिंह राणा

मुद्रक : एजुकेशनल स्टोर्स,
गाजियाबाद (उ.प्र.)

संस्थान समाचार में प्रकाशित समाचारों का स्रोत केंद्रीय हिंदी संस्थान के विभिन्न विभागों/केंद्रों से प्राप्त सामग्री है।
संस्थान समाचार के संबंध में अपनी प्रतिक्रिया और सुझाव संपादक के पास भेज सकते हैं।
संस्थान समाचार का ई-मेल:
sansthansamacharkhs2021@gmail.com

सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल आगरा-282005 द्वारा वितरण हेतु दिल्ली केंद्र से प्रकाशित।